

第二册

三晋历史人物

主编 刘贯文 任茂棠 张海瀛

副主编 冀满红



书目文献出版社

三晋历史人物

第二册

主编 刘贯文

任茂棠

张海瀛

副主编 冀满红

书目文献出版社

(京)新登字189号

三晋历史人物

(第二册)

主 编 刘贯文 任茂棠 张海瀛

副主编 冀满红

书目文献出版社

(北京文津街七号)

北京市冠中印刷厂排版印刷

书目文献出版社发行 新华书店经销

850×1168毫米 大32开本 印张455千字

1993年4月北京第1版 1993年4月北京第1次印刷

印数：1—1500 册

ISBN 7-5013-1000-9

K·150 定价：16.50元

DM57 / 15

三晋文化研究丛书编辑委员会

总 编：赵雨亭

副总编：刘舒侠

刘贯文

李玉明

刘 江

陈墨章

张 领

目 录

隋

| | |
|-----|-------------|
| 柳 裴 | 王灵善(1) |
| 柳 俭 | 胡 建(2) |
| 柳 机 | 王振芳(4) |
| 杜 彦 | 王霄燕(5) |
| 赵 翘 | 王灵善(7) |
| 薛道衡 | 王灵善(9) |
| 郭 衍 | 岳 峰(13) |
| 郭 荣 | 胡 建(16) |
| 薛世雄 | 王灵善(18) |
| 王 通 | 王灵善(19) |
| 裴 蕴 | 胡 建(21) |
| 王 劄 | 张玉玲(24) |
| 王 颁 | 王振芳 王金梅(26) |
| 薛 胥 | 王振芳(26) |
| 柳 或 | 王振芳(28) |
| 吐万绪 | 王振芳(31) |
| 柳 庄 | 王振芳(32) |
| 裴 肅 | 王振芳(34) |
| 尔朱敞 | 王振芳(35) |
| 裴 政 | 王振芳(37) |
| 杨义臣 | 王振芳(39) |
| 陈孝意 | 王振芳(42) |
| 薛 举 | 王振芳 乔广田(43) |

| | | |
|----------|-----|----------|
| 薛仁果 | 王振芳 | 乔广田(45) |
| 裴仁基 | | 王灵善(47) |
| 刘武周 | | 张玉玲(49) |
| 苑君璋 | | 张玉玲(51) |
| 裴 矩 | | 王灵善(53) |
| 唐 | | |
| 唐 俭 | | 赵云旗(58) |
| 柴 绍 | | 赵云旗(60) |
| 道 绰 | 王振芳 | 乔桂香(62) |
| 裴 寂 | | 孙益力(64) |
| 王 珪 | | 王永平(68) |
| 温大雅 | | 宋大川(71) |
| 温彦博 | | 张玉玲(74) |
| 武士彟 | | 刘 旭(76) |
| 王 度 | | 马斗全(80) |
| 尉迟敬德 | | 赵云旗(82) |
| 王 绩 | | 马斗全(86) |
| 薛 收 | 王振芳 | 乔广田(91) |
| 薛大鼎 | | 王振芳(92) |
| 王皇后 | | 王永平(94) |
| 张玄素 | | 王振芳(97) |
| 薛仁贵 | | 王振芳(99) |
| 裴行俭 | | 孙益力(103) |
| 薛元超 | 王振芳 | 乔广田(108) |
| 王方翼 | | 王永平(110) |
| 裴 炎 | | 孙益力(114) |
| 武则天 | | 刘 旭(119) |
| 武承嗣 | | 刘 旭(125) |

| | | |
|-----|---------|-------|
| 狄仁杰 | 张玉玲 | (128) |
| 敬 晖 | 王振芳 | (135) |
| 薛季昶 | 王振芳 | (137) |
| 武三思 | 刘 旭 | (138) |
| 宗楚客 | 赵云旗 | (142) |
| 武懿宗 | 刘 旭 | (143) |
| 薛 纳 | 王振芳 | (145) |
| 薛 稷 | 张 肇 | (147) |
| 柳 冲 | 王振芳 | (151) |
| 王 勃 | 马斗全 | (152) |
| 普 寂 | 王振芳 乔桂香 | (156) |
| 武攸绪 | 刘 旭 | (157) |
| 宋之问 | 李 峰 王晋玲 | (158) |
| 张嘉贞 | 王振芳 | (163) |
| 宋务光 | 赵云旗 | (166) |
| 裴光庭 | 孙益力 | (168) |
| 裴 灌 | 孙益力 | (171) |
| 裴耀卿 | 王振芳 贺维极 | (173) |
| 裴 宽 | 孙益力 | (176) |
| 裴 谓 | 孙益力 | (180) |
| 张守珪 | 王振芳 | (182) |
| 尹知章 | 赵云旗 | (186) |
| 苗晋卿 | 林宏跃 | (186) |
| 王 翰 | 马斗全 | (189) |
| 王知敬 | 张 肇 | (191) |
| 王知慎 | 张 肇 | (192) |
| 王之涣 | 马斗全 | (193) |
| 薛 据 | 马斗全 | (195) |

| | |
|------|--------------|
| 李 橙 | 畅引婷(198) |
| 王昌龄 | 马斗全(200) |
| 王 缂 | 王永平(203) |
| 王 铁 | 王永平(204) |
| 王 维 | 马斗全(206) |
| 王忠嗣 | 王永平(210) |
| 封常清 | 王振芳(214) |
| 杨国忠 | 畅引婷(217) |
| 虢国夫人 | 王振芳(222) |
| 张 巡 | 王振芳(224) |
| 柳 芳 | 王振芳(228) |
| 吕 誣 | 王振芳(230) |
| 杨贵妃 | 畅引婷(232) |
| 乔 珑 | 赵云旗(237) |
| 薛 钰 | 王振芳(238) |
| 董 晋 | 王振芳 王金梅(241) |
| 曲 环 | 王振芳(243) |
| 张延赏 | 王振芳(245) |
| 裴 埤 | 王振芳(247) |
| 刘昌裔 | 王振芳(249) |
| 范希朝 | 王振芳(250) |
| 王 钔 | 王永平(252) |
| 王 翊 | 王永平(255) |
| 耿 浩 | 马斗全(256) |
| 阳 城 | 赵云旗(259) |
| 卢 纶 | 马斗全(262) |
| 樊 泽 | 赵云旗(265) |
| 唐 次 | 赵云旗(266) |

| | | |
|-----|-----|----------|
| 李光进 | 畅引婷 | (267) |
| 卫次公 | 王振芳 | 王金梅(267) |
| 姚令言 | | 赵云旗(269) |
| 薛 平 | | 王振芳(270) |
| 畅 当 | | 赵云旗(272) |
| 胡 证 | 王振芳 | 田同和(273) |
| 武元衡 | | 刘 旭(274) |
| 张弘靖 | | 王振芳(276) |
| 王 播 | | 王永平(278) |
| 李光颜 | | 畅引婷(280) |
| 薛存诚 | 王振芳 | 王金梅(282) |
| 王 起 | | 王永平(283) |
| 段文昌 | | 赵云旗(285) |
| 温 造 | | 张玉玲(286) |
| 郑 注 | | 赵云旗(289) |
| 裴 濂 | | 孙益力(292) |
| 裴 度 | | 刘 旭(294) |
| 王 脳 | | 张 肀(299) |
| 武儒衡 | | 刘 旭(300) |
| 吕 温 | | 马斗全(302) |
| 王 涯 | | 王永平(305) |
| 狄兼谟 | | 王振芳(307) |
| 白居易 | | 马斗全(308) |
| 柳宗元 | | 马斗全(316) |
| 卢简辞 | 王振芳 | 王金梅(322) |
| 白行简 | | 马斗全(323) |
| 卢弘正 | | 王振芳(324) |
| 白敏中 | | 赵云旗(326) |

| | |
|-----------|--------------|
| 卢简求 | 王振芳(327) |
| 薛用弱 | 马斗全(329) |
| 王彦威 | 王永平(331) |
| 温庭筠 | 马斗全(332) |
| 张彦远 | 张 肅(337) |
| 聂夷中 | 马斗全(340) |
| 王 式 | 王永平(342) |
| 王 锋 | 王永平(344) |
| 吕 岩 | 王振芳(346) |
| 司空图 | 朱 琦(350) |
| 李克用 | 杨巨平(354) |
| 赵 匡 | 王振芳(358) |
| 五代 | |
| 荆 浩 | 张 肃(359) |
| 薛贻矩 | 刘建生 李晓明(364) |
| 史 俨 | 杨巨平(365) |
| 周德威 | 刘建生 张 敏(366) |
| 李存璋 | 杨巨平(368) |
| 后唐曹皇后 | 刘建生 张 敏(370) |
| 李嗣昭 | 落 叶(372) |
| 郭崇韬 | 王志华(374) |
| 张 宪 | 李天亮(377) |
| 安重霸 | 孙丽英(378) |
| 安重诲 | 孙丽英(380) |
| 安元信 | 王振芳(384) |
| 王 权 | 王志华(385) |
| 李承嗣 | 王志华(386) |
| 李嗣源 | 王志华(388) |

| | | |
|-------|-----|----------|
| 张敬达 | 王志华 | (392) |
| 王建立 | 王志华 | (393) |
| 杨彦询 | 杨巨平 | (395) |
| 史建瑭 | 刘建生 | 张敏(397) |
| 安重荣 | 孙丽英 | (398) |
| 韩 恽 | 杨巨平 | (402) |
| 武 潼 | 王振芳 | 曹雪洁(403) |
| 李从温 | 王志华 | (405) |
| 药元福 | 张志江 | (406) |
| 李存勗 | 刘建生 | 张敏(408) |
| 武汉球 | 王志华 | (411) |
| 折从阮 | 王振芳 | (412) |
| 石敬瑭 | 刘建生 | 张敏(414) |
| 毋昭裔 | 王振芳 | 曹雪洁(417) |
| 薛怀让 | 张志江 | (419) |
| 史 懿 | 杨巨平 | (420) |
| 刘知远 | 孟艾芳 | (421) |
| 刘 崇 | 落 叶 | (424) |
| 史匡翰 | 杨巨平 | (425) |
| 李建崇 | 杨巨平 | (427) |
| 后汉李皇后 | 杨巨平 | (428) |
| 王守恩 | 杨巨平 | (429) |
| 郑仁诲 | 落 叶 | (430) |
| 康思立 | 杨巨平 | (431) |
| 韩 通 | 张玉玲 | (432) |
| 李 筠 | 王志华 | (435) |
| 石重贵 | 杨巨平 | (437) |
| 白延遇 | 杨巨平 | (440) |

| | |
|----------|----------|
| 李廷珪 | 李天亮(441) |
| 刘继元 | 王志华(442) |
| 张永德 | 张玉玲(444) |
| 宋 | |
| 边光范 | 吕晓庄(447) |
| 慕容延钊 | 张玉玲(449) |
| 王全斌 | 李俊清(451) |
| 吴廷祚 | 李豫(453) |
| 李处耘 | 张志江(455) |
| 王溥 | 李俊清(457) |
| 罗彦环 | 吕晓庄(459) |
| 李汉超 | 李豫(460) |
| 党进 | 张玉玲(461) |
| 杨业 | 张玉玲(463) |
| 李崇矩 | 李豫(467) |
| 辛仲甫 | 吕晓庄(469) |
| 呼延赞 | 张玉玲(471) |
| 田绍斌 | 落叶(473) |
| 郭守文 | 李豫(475) |
| 袁继忠 | 吕晓庄(477) |
| 毕士安 | 张玉玲(479) |
| 杨琼 | 落叶(482) |
| 赵昌言 | 吕晓庄(484) |
| 宋太初 | 落叶(487) |
| 王瓘 | 张裔(489) |
| 王端 | 张裔(491) |
| 王拙 | 张裔(492) |
| 王居正 | 张裔(493) |

| | |
|---------|----------|
| 薛 颜 | 张志江(495) |
| 李允则 | 张玉玲(496) |
| 杨延昭 | 张玉玲(499) |
| 阎守恭 | 张志江(501) |
| 高克明 | 王小珑(502) |
| 薛 奎 | 吕晓庄(505) |
| 李遵勖 | 李 豫(508) |
| 王 信 | 李 豫(510) |
| 孙 复 | 魏宗禹(511) |
| 李昭亮 | 李 豫(515) |
| 文彦博 | 李 豫(516) |
| 狄 青 | 李俊清(518) |
| 刘羲叟 | 李 豫(522) |
| 司马光 | 崔凡芝(523) |
| 杨文广 | 张玉玲(529) |
| 苗 授 | 冀燕青(530) |
| 王 诜 | 张 裔(532) |
| 郭若虚 | 张 裔(537) |
| 米 蒂 米友仁 | 张 裔(539) |
| 孔三传 | 张 裔(546) |
| 杨 震 | 冀燕青(548) |
| 赵 鼎 | 李俊清(550) |
| 王 彦 | 李 豫(553) |
| 萧 照 | 张 裔(556) |
| 梁 兴 | 李 豫(560) |
| 杨存中 | 李 豫(561) |
| 马 远 | 张 裔(563) |
| 马 轼 | 张 裔(569) |

后记..... (571)

柳 裳

王灵善

柳裳，字茂和，隋河东解（今山西解州）人。生卒年不详，主要活动在隋文帝开皇年间（581—600年）。是隋文帝杨坚建隋的佐命功臣之一。

柳裳祖辈历仕南朝之齐、梁，俱为显官。柳裳仕梁，官拜尚书郎，梁元帝时受命到长安与西魏连和。不久，江陵陷落，柳裳也就留在关中。在北周明帝、武帝时期，柳裳自麟趾学士累迁至太子侍读。由于任职东宫，接近太子，所以，周宣帝即位后，柳裳被拜为仪同三司，并进爵为公，任御史大夫，侍卫宫中。

北周宣帝宇文赟是一个荒淫、昏庸的君主，刚刚20岁，就宣布传位给自己年仅8岁的儿子，自己做起太上皇来，他还十分残酷，大肆杀戮臣僚，搞得朝内人人自危，惶惶不可终日。周宣帝病死后，他的8岁的小儿子正式登基为周静帝，朝臣们知道北周要灭亡，就各谋去就，当时受周宣帝宠信的刘昉、郑译、柳裳、韦睿、皇甫绩等5人就密谋引外戚杨坚入朝辅政，以为依托。据史称，当时杨坚辞让不肯就职，柳裳就对杨坚说：“时不可再，机不可失，今事已然，宜早定大计。天与不取，反受其咎，如更迁延，恐贻后悔①”。杨坚听从了柳裳的意见，当了大丞相，都督中外诸军事，总揽朝政。柳裳因此升官，进位上开府，拜内史大夫，参预机密。

杨坚执掌朝政后，山东相州另一位皇戚相州总管尉迟迥起兵反杨，郢州总管司马消难、益州总管王谦举兵响应，这就是周隋之

①《隋书》中华书局1973年版标点本，第4册，总第1138页。

际有名的“三总管之乱”。担任并州总管的李穆也“彼怀犹豫”。^①杨坚就是在这时派柳裘去见李穆，柳裘反复向李穆陈说利害，劝其归心于杨坚。李穆最后决计向杨坚“输诚款”，归依杨坚。柳裘此番舌战之功，不亚于其曾参与定策佐命。此后，柳裘又受命安辑淮南地区。可见，柳裘对杨氏夺取天下，有巨大贡献。

杨坚虽因刘昉、郑译、柳裘等人的拥戴而上台，但当上皇帝后又对这些人猜防甚严。他曾对大臣们说：“微刘昉、郑译及卢贲、柳裘、皇甫绩，则我不至此。然此等皆反复子也。当周宣帝时，以无赖得幸，及帝大渐，颜子信等请以宗王辅政、此辈行诈，顾命于我，我将为治，又欲乱之。”^②所以，佐命功臣，大多没有善终，柳裘算是他们中幸运的一个了。开皇元年（581年），柳裘以佐命功臣进位大将军，但却被放为外任，做了许州刺史，后又转任曹州刺史。柳裘在地方上任职，“在官清简，吏民怀之”，更重要的是，他离开权力中心较远，也就避免了杨坚对他的猜忌，使他能保持自己的晚节。后来，杨坚“思裘定策功，欲加荣秩，将征之，顾问朝臣曰：‘曹州刺史何当入朝？’或对曰：‘即今冬也’。帝乃止，裘寻卒，高祖伤惜久之”。^③柳裘在辞世之前，受到猜忌之心极强的隋文帝的如此顾念，真可谓“善终”了。

柳 俭

胡 建

柳俭，字道约，河东解（今运城解州镇）人。生于北魏武泰元年

①《隋书》第4册，总第1139页。

②《隋书》第4册，总第1143页。

③《隋书》第4册，总第1139页。

(528年),卒于隋大业十三年(617年)。隋朝官吏。

柳俭出生于封建世族家庭,祖父柳元璋,在北魏、西魏任职,为司州(今河南洛阳)大中正、相(今河北临漳县西南邺镇)、华(今陕西华县)二州刺史。父柳裕,北周时任闻喜(今山西闻喜县)令。柳俭在家庭封建礼教熏陶下,“有局量,立行清苦”,^①为时人敬重。不久,被举荐仕官,先后任宣纳上士,畿伯大夫。

北周大定年间(581年)政权落入外戚杨坚手中,建立隋朝。柳俭仍任官仕隋,历任水部侍郎,广汉(今四川广汉北)太守,蓬州(今四川营山东北)刺史,邛州(今四川邛崃东南)刺史。隋炀帝继位,又任朝散大夫,弘化(今甘肃庆阳县)太守,上大将军等职。

柳俭一生仕官,居正清廉,只求清名,以“仁明著称”。任蓬州刺史期间,社会安宁、秩序井然,“狱无系囚”,^②百姓称道。擢任邛州刺史,“在职十年,人夷悦服”,他从不贪秽枉法,假公济私。后因得罪了蜀王杨秀,免官还乡。还乡时“乘敝车羸马,妻子衣食不赡”。^③见者无不为之叹服。隋炀帝继位,受职的官僚中,大多是士族功臣,军事将领,唯柳俭“起自良吏”。^④他被复召出任弘化太守后,愈廉洁奉公,从此,清名享誉天下。大业五年(609年)隋炀帝杨广荟集天下郡国群臣入朝议事时,面对众臣,问纳言苏威、吏部尚书牛弘,谁为清名天下第一。苏威等异口同声举荐弘化太守柳俭。因此,柳俭受到隋炀帝极大的赏赐。

隋朝末年,农民起义频繁,起义军屡次进逼弘化,柳俭据守顽抗,“抚结人夷,卒无离叛,竟以保全。”^⑤隋炀帝荒淫残暴,大势已去,死于兵变之后。柳俭这位暴君的忠臣,闻讯“缟素于州,南向恸哭。”^⑥不久,柳俭又被拜为上大将军,随着隋王朝的灭亡,他也返乡,后卒于家中,时年89岁。

①《隋书》中华书局1973年标点本,第6册,总第1683页。

②③④《隋书》第6册,总第1683页。

⑤⑥《隋书》第6册,第1684页。